विद्याभवन बालिका विद्यापीठ लखीसराय

कक्षा – अष्टम   दिनांक -05 - 01 - 2022

विषय -हिन्दी   विषय शिक्षक - पंकज कुमार

सुप्रभात् बच्चों आज अलकार के बारे में पुनः अध्ययन करेंगे।

अर्थालंकार

अर्थालंकार की परिभाषा

जब किसी वाक्य का सौन्दर्य उसके अर्थ पर आधारित होता है तब यह अर्थालंकार के अंतर्गत आता है ।

अर्थालंकार के भेद

अर्थालंकार के मुख्यतः पाँच भेद होते हैं-

- **उपमा अलंकार**
- **रूपक अलंकार**
- **उत्प्रेक्षा अलंकार**
- **अतिशयोक्ति अलंकार**
- **मानवीकरण अलंकार**

उपमा अलंकार- उप का अर्थ है समीप से और पा का अर्थ है तोलना या देखना। अतः जब दो भिन्न वस्तुओं में समानता दिखाई जाती है, तब वहाँ उपमा अलंकार होता है।

जैसे- कर कमल-सा कोमल है।

यहाँ पैरों को कमल के समान कोमल बताया गया है। अतः यहाँ उपमा अलंकार होगा।

रूपक अलंकार- जब उपमान और उपमेय में अभिन्नता या अभेद दिखाया जाए तब यह रूपक अलंकार कहलाता है।

जैसे- “मैया मैं तो चन्द्र-खिलौना लैहों”

ऊपर दिए गए उदाहरण में चन्द्रमा एवं खिलोने में समानता न दिखाकर चाँद को ही खिलौना बोल दिया गया है। अतएव यह रूपक अलंकार होगा।

उत्प्रेक्षा अलंकार- जहाँ उपमेय में उपमान के होने की संभावना का वर्णन हो तब वहां उत्प्रेक्षा अलंकार होता है। यदि पंक्ति में -मनु, जनु,मेरे जानते,मनहु,मानो, निश्चय, ईव आदि आता है बहां उत्प्रेक्षा अलंकार होता है।

जैसे- मुख मानो चन्द्रमा है।

ऊपर दिए गए उदाहरण में मुख के चन्द्रमा होने की संभावना का वर्णन हो रहा है। उक्त वाक्य में मानो भी प्रयोग किया गया है अतः यहाँ उत्प्रेक्षा अलंकार है।

अतिशयोक्ति अलंकार- जब किसी बात का वर्णन बहुत बढ़ा-चढ़ाकर किया जाए तब वहां अतिशयोक्ति अलंकार होता है।

जैसे- आगे नदियाँ पड़ी अपार, घोडा कैसे उतरे पार। राणा ने सोचा इस पार , तब तक चेतक था उस पार।

ऊपर दिए गए उदाहरण में चेतक की शक्तियों व स्फूर्ति का बहुत बढ़ा-चढ़ाकर वर्णन किया गया है। अतएव यहाँ पर अतिशयोक्ति अलंकार होगा।

मानवीकरण अलंकार- जब प्राकृतिक चीज़ों में मानवीय भावनाओं के होने का वर्णन हो तब वहां मानवीकरण अलंकार होता है।

जैसे- फूल हँसे कलियाँ मुस्कुराई।

ऊपर दिए गए उदाहरण में आप देख सकते हैं की फूलों के हसने का वर्णन किया गया है जो मनुष्य करते हैं अतएव यहाँ मानवीकरण अलंकार है।